03-05-2023

जीएसटी संग्रह

समाचार पत्रों में क्यों?

हाल ही में वित्त मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल 2023 में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) संग्रह 1,87,035 करोड़ रुपये हुआ।

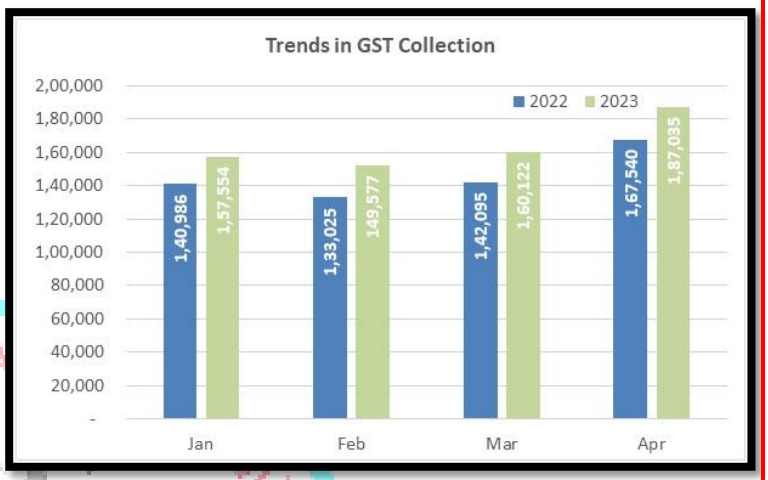

त्वरित मुद्दा?

- सीजीएसटी 38,440 करोड़ रुपये, एसजीएसटी 47,412 करोड़ रुपये, आईजीएसटी 89,158 करोड़ रुपये और उपकर 12,025 करोड़ रुपये है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- अप्रैल 2023 में पहली बार सकल जीएसटी संग्रह 1.75 लाख करोड़ रुपये के आंकड़े को पार कर गया।
- अप्रैल 2023 के महीने में जीएसटी राजस्व अप्रैल 2022 के जीएसटी राजस्व की तुलना में 12 प्रतिशत अधिक है।
- वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) भारत में 2017 से लागू एक महत्वपूर्ण अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था है।
- जीएसटी के लागू होने से केन्द्र सरकार तथा विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा भिन्न भिन्न दरों पर लगाए जा रहे विभिन्न करों को हटाकर पूरे देश के लिए एक ही अप्रत्यक्ष कर प्रणाली लागू हो गयी है।
- जीएसटी में उत्पाद शुल्क, मूल्यवर्द्धित कर, सेवा कर, जैसे अधिकांश अप्रत्यक्ष करों को सम्मिलित किया गया है।
- जीएसटी एक मूल्य वर्धित कर है जो कि विनिर्माता से लेकर उपभोक्ता तक वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति पर एक एकल कर है।

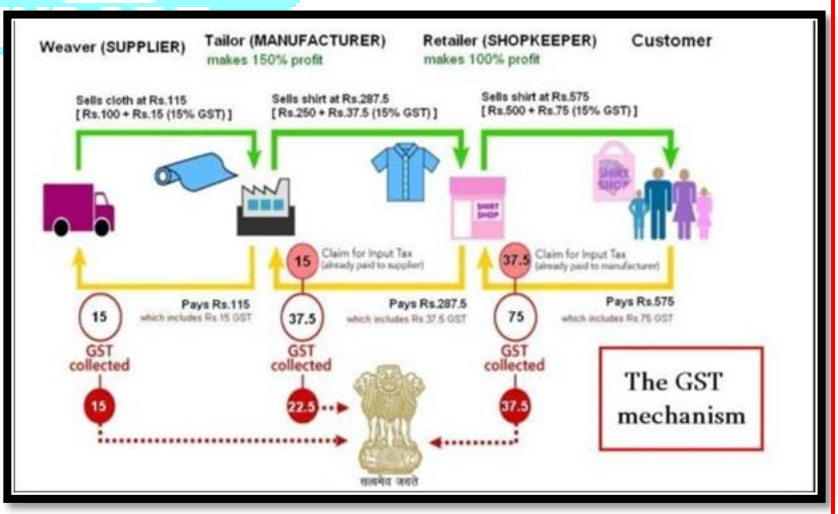

- वस्तुओं के निर्माण या वस्तुओं की बिक्री या सेवाओं के प्रावधान पर पुरानी अवधारणा के विपरीत जीएसटी वस्तुओं या सेवाओं की आपूर्ति पर आरोपित होता है।
- यह एक गंतव्य आधारित कर है, इसे निर्माता राज्य की जगह पर, उस राज्य में वसूला जाता है, जहां माल बेचा जाता है।
- जीएसटी परिषद;-भारतीय संविधान का अनुच्छेद 279ए भारत के राष्ट्रपति को केंद्र और राज्यों के संयुक्त मंच के रूप में जीएसटी परिषद का गठन करने की शक्ति देता है।

- **जीएसटी परिषद में शामिल होते हैं -**
  - केंद्रीय वित्त मंत्री - अध्यक्ष
  - केंद्रीय राज्य मंत्री - सदस्य
  - वित्त या कराधान के प्रभारी मंत्री या
  - प्रत्येक राज्य सरकार द्वारा नामित
  - कोई अन्य मंत्री - सदस्य
- जीएसटी परिषद, जीएसटी पर संघ और राज्यों को सिफारिशें करने के लिए एक शीर्ष समिति है।
- जीएसटी परिषद में निर्णय कम से कम तीन-चौथाई मतों के बहुमत से लिए जाते हैं।
- कुल डाले गए वोटों का एक-तिहाई भार केंद्र के पास होता है और सभी राज्यों के पास संयुक्त रूप से कुल डाले गए वोटों का दो-तिहाई भार होता है।

शीलभट्टारिका

समाचार पत्रों में क्यों?

हाल ही में, पुणे स्थित भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं ने तांबे के प्लेटों की डिकोडिंग के माध्यम से प्रसिद्ध प्राचीन संस्कृत कवयित्री शीलभट्टारिका से संबंधित जानकारी प्राप्त की।

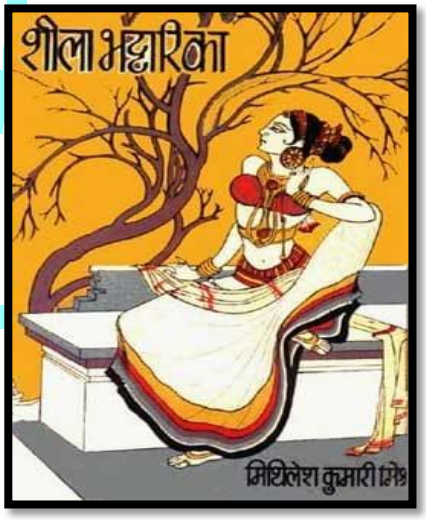

त्वरित मुद्दा?

- शोध में बादामी चालुक्य शासक विजयादित्य (696-733 CE) के शासनकाल के 5 ताम्रपत्रों से युक्त चार्टर का अध्ययन किया गया।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- शीलभट्टारिका 9वीं शताब्दी की प्राचीन संस्कृत कवयित्री थीं।
- उनकी एक कविता में नर्मदा नदी (रेवा) और विंध्य पर्वत का उल्लेख है। इसलिए, एक युवा महिला के रूप में, वह शायद नर्मदा नदी के किनारे, विंध्य के पास रहती थीं।
- मध्ययुगीन संस्कृत साहित्यिक आलोचकों द्वारा उनके काव्य कौशल की प्रशंसा की गई।
- वह प्राचीन भारत में शास्त्रीय संस्कृत साहित्य के पुरुष प्रधान क्षेत्र में एक कवयित्री के रूप में सामने आईं।
- यह अनुमान लगाया जाता है कि वह 8वीं शताब्दी के राष्ट्रकूट शासक ध्रुव की रानी शिलामहादेवी हो सकती हैं।
- हाल के शोध के अनुसार, यह पता चलता है कि वह चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय की बेटी थी।
- उत्तर-ब्राह्मी लिपि में अंकित संस्कृत पाठ में कुल 65 पंक्तियाँ थीं।
- चार्टर से पता चला है कि राजा विजयादित्य चालुक्य ने शीलभट्टारिका के पुत्र महेंद्रवर्मा की सिफारिश के आधार पर विष्णु शर्मा नामक एक विद्वान को चिगतेरी गाँव दान में दिया था।

- प्लेटों में शीलभट्टारिका के ससुर मोक्करा (या मुश्करा) और उनके पिता दुर्विनीता के नामों का भी उल्लेख है, जो एक कुशल संगीतकार थे और उन्होंने शास्त्रीय महाकाव्य किरातार्जुनीय के लेखक भारवी को संरक्षण दिया था।
- कॉपर-प्लेट चार्टर्स क्या हैं?-वे तांबे की प्लेटों पर प्राचीन शिलालेख हैं, जो मध्ययुगीन काल के दौरान भारत में कानूनी दस्तावेजों के रूप में उपयोग किए गए थे।
- इन प्लेटों का उपयोग भूमि अनुदान, दान और अन्य शाही फरमानों को दर्ज करने के लिए किया जाता था।
- इस चार्टर में पाँच प्लेटें थीं, जो एक तांबे की अंगूठी द्वारा एक सुंदर वराह (सूअर) मुहर (बदामी चालुक्यों का ट्रेडमार्क) से जुड़ी हुई थीं।

अन्य प्रमुख तथ्य?

सामाजिक सुरक्षा संहिता 2020 में मुख्य प्रावधान

- इस संहिता में पहली बार श्रम कानूनों के दायरे में गिग श्रमिकों को शामिल किया गया है।
- इस संहिता में श्रमिकों और कर्मचारियों के बीच अंतर किया गया है।
- गिग कर्मचारियों के लिए एक सामाजिक सुरक्षा कोष की स्थापना, जिसमें गिग नियोक्ताओं को अपने वार्षिक टर्नओवर का 1-2% योगदान करना होगा।
- केंद्र और राज्य सरकारों को गिग वर्कर्स के लिए उपयुक्त सामाजिक सुरक्षा योजनाएं बनानी चाहिए।
- यह संहिता योजनाओं के कार्यान्वयन की निगरानी के लिए केंद्र सरकार द्वारा एक राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा बोर्ड के गठन की भी परिकल्पना करती है।

गिग इकॉनमी

समाचार पत्रों में क्यों?

हाल ही में,किए गए ज़ोमैटो के स्वामित्व वाले ब्लिंकिट डिलीवरी एजेंटों के हड़ताल से एक बार फिर देश में गिग इकॉनमी को प्रभावित करने वाले मुद्दे चर्चा में आ गए हैं।

त्वरित मुद्दा?

- दरअसल यह मामला तब सामने आया, जब ब्लिंकिट ने न्यूनतम भुगतान प्रति डिलीवरी को 25 रुपये से घटाकर 15 रुपये कर दिया।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- नीति आयोग के अनुमान के अनुसार, 2029 तक लगभग 23.5 मिलियन कर्मचारी गिग इकॉनमी से जुड़ जाएंगे।
- गिग वर्कर्स पारंपरिक नियोक्ता-कर्मचारी संबंध के बाहर के श्रमिकों को संदर्भित करते हैं। गिग वर्कर्स के दो ग्रुप हैं- प्लेटफॉर्म वर्कर्स और नॉन-प्लेटफॉर्म वर्कर्स।

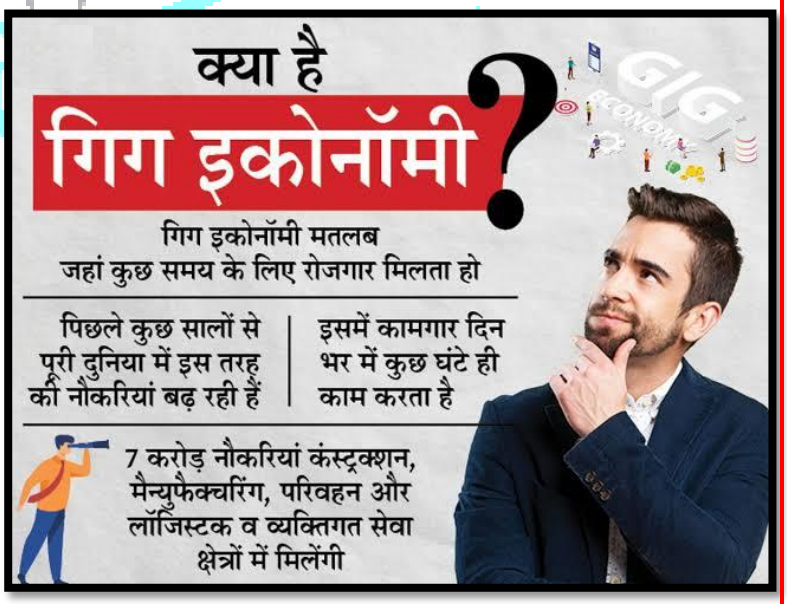

- जब गिग वर्कर, ग्राहकों से जुड़ने के लिए ऑनलाइन एल्गोरिथम मैचिंग प्लेटफॉर्म या ऐप का इस्तेमाल करते हैं, तो उन्हें प्लेटफॉर्म वर्कर कहा जाता है।
- जो लोग ऑनलाइन एल्गोरिथम मैचिंग प्लेटफॉर्म या ऐप के बाहर काम करते हैं, वे गैर-प्लेटफ़ॉर्म कर्मचारी हैं, जिनमें निर्माण श्रमिक और गैर-प्रौद्योगिकी-आधारित अस्थायी कर्मचारी शामिल हैं।
- चूंकि गिग इकॉनमी पारंपरिक, पूर्णकालिक रोजगार के दायरे से बाहर है, गिग श्रमिकों के पास आमतौर पर बुनियादी रोजगार अधिकारों की कमी होती है जैसे कि
  - न्यूनतम मजदूरी
  - ओवरटाइम भुगतान
  - चिकित्सा अवकाश
  - नियोक्ता-कर्मचारी विवादों का
  - वैधानिक रूप से बाध्य समाधान।
- यह नियोक्ता द्वारा प्रयोग किए जाने वाले नियंत्रण और पर्यवेक्षण की सीमा और संगठन के साथ कार्यकर्ता के एकीकरण पर निर्भर करता है।
- भारत में, कर्मचारी न्यूनतम मजदूरी अधिनियम 1948, ईपीएफ अधिनियम 1952 और बोनस भुगतान अधिनियम 1965 के तहत कई लाभों के हक दार हैं।
- इसी तरह, ठेका मजदूरों को ठेका श्रम (विनियमन और उन्मूलन) अधिनियम 1970 के तहत शासित किया जाता है और वे EPF के तहत लाभ के हकदार हैं।
- हालांकि, गिग वर्कर कर्मचारियों और स्वतंत्र ठेकेदारों दोनों की विशेषताओं को प्रदर्शित करते हैं, परिणामस्वरूप वैधानिक लाभों के दायरे से बाहर हो जाते हैं।

अन्य प्रमुख तथ्य?

उनकी साहित्यिक कृतियाँ

- शीलभट्टारिका को प्रेम, नैतिकता, राजनीति, प्रकृति, सौंदर्य, मौसम, आचार संहिता और विभिन्न प्रकार की नायिकाओं की विशिष्ट विशेषताओं जैसे विभिन्न विषयों पर कम से कम 46 कविताएँ लिखने के लिए जाना जाता है।
- हालाँकि, उनकी अधिकांश रचनाएँ अब खो गई हैं और उनकी केवल छह छोटी कविताएँ ही मौजूद हैं।
- शीलभट्टारिका को पांचाली साहित्यिक शैली में शब्द और अर्थ के बीच संतुलन बनाए रखने हेतु जाना जाता है।
- विद्वानों के अनुसार, पांचाली शैली का पता शीलभट्टारिका की रचनाओं से लगाया जा सकता है।

न्यूज फटाफट

एयर ड्रॉपेबल कंटेनर का सफल परीक्षण

- भारतीय नौसेना और रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) ने 150 किलोग्राम की पेलोड क्षमता वाले एक एयर ड्रॉपेबल कंटेनर का सफल परीक्षण किया है, कंटेनर को IL 38SD विमान से गिराया गया था।
- परीक्षण का उद्देश्य तट से 2,000 किलोमीटर से अधिक की दूरी पर तैनात जहाज़ों के लिये महत्त्वपूर्ण इंजीनियरिंग स्टोर की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु त्वरित प्रतिक्रिया प्रदान करके नौसैनिक परिचालन रसद क्षमताओं में सुधार करना था।
- इसका उद्देश्य पुर्जों को इकट्ठा और स्टोर करने के लिये जहाज़ों के लिये तट के करीब आने की आवश्यकता को कम करना भी है।
- कंटेनर का विकास विशाखापत्तनम में नौसेना विज्ञान और तकनीकी प्रयोगशाला (NSTL), आगरा में एरियल डिलीवरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट एस्टैब्लिशमेंट (ADRDE) तथा बंगलूरू में वैमानिकी विकास प्रतिष्ठान (ADE) सहित तीन DRDO प्रयोगशालाओं का एक सहयोगी प्रयास था।
- एयर ड्रॉपेबल कंटेनर का सफल परीक्षण भारतीय नौसेना की परिचालन क्षमताओं को बढ़ाएगा, जिससे तट से दूर तैनात जहाज़ों को महत्त्वपूर्ण आपूर्ति तेज़ी से प्रदान करना आसान हो जाएगा।

भारत की पहली अंत:समुद्रीय सुरंग

- बृहन्मुंबई नगर निगम द्वारा मुंबई तटीय सड़क परियोजना पर दो वर्ष से अधिक के कार्य के पश्चात भारत की पहली अंत:समुद्रीय जुड़वां सुरंगें मुंबई में खुलने वाली हैं।
- ये सुरंगें 10.58 किलोमीटर लंबी तटीय सड़क परियोजना का हिस्सा हैं जो मरीन ड्राइव को बांद्रा-वर्ली सी लिंक से जोड़ती हैं।
- 2.07 किलोमीटर लंबी सुरंगें समुद्र तल से 17-20 मीटर नीचे स्थित हैं, जिसमें लगभग 1 किलोमीटर का हिस्सा समुद्र के नीचे है।
- परियोजना का लक्ष्य पीक आवर्स के दौरान यात्रा के समय को 45 मिनट से घटाकर सिर्फ 10 मिनट करना है।
- सुरंगों में छह क्रॉस मार्ग प्रदान किए जाएंगे,जिसमें चार पैदल चलने वालों के लिये और दो मोटर चालकों के लिये, प्रत्येक सुरंग में तीन लेन होंगे।
- सुरंगों को सबसे बड़ी टनल-बोरिंग मशीन (TBM) की मदद से बनाया गया था।

सर्वोच्च न्यायालय ने हेट स्पीच पर प्रथिमिकी दर्ज करने के आदेश दिये

- भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने सभी राज्यों को हेट स्पीच की घटनाओं पर स्वत: संज्ञान लेते हुए प्राथमिकी दर्ज करने और शिकायत दर्ज होने की प्रतीक्षा किये बिना अपराधियों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही शुरू करने का निर्देश दिया है।
- न्यायालय ने भारतीय दंड संहिता (IPC) की धारा 153A (धर्म के आधार पर विभिन्न समूहों के बीच वैमनश्य को बढ़ावा देना), 153B (आरोप, राष्ट्रीय एकता के प्रतिकूल दावे), 505 (सार्वजनिक अनिष्ट), 295A (धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने के इरादे से जान-बूझकर और दुर्भावनापूर्ण कार्य) सहित विशिष्ट दंड प्रावधानों के तहत हेट स्पीच के अपराधियों की पहचान करने एवं कार्रवाई करने की आवश्यकता पर बल दिया।

- न्यायालय ने अक्तूबर 2022 में इसी तरह का एक आदेश पारित किया था। हालाँकि यह तर्क दिया गया था कि हेट स्पीच से निपटने की आड़ में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का गला नहीं घोंटा जाना चाहिये और न्यायालय का मानना है संविधान भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में देखता है जिसमें व्यक्ति की गरिमा एवं एकता तथा देश की अखंडता भी सुनिश्चित होनी चाहिये।

स्फीयरॉइडल कार्बोनेसियस कण

- स्फीयरॉइडल कार्बोनेसियस कण फ्लाई-ऐश का एक घटक है, जो उद्योगों से उत्सर्जित होने वाली गैसे के साथ वातावरण में फ़ैल जाते हैं।
- ये कण औद्योगिक उप-उत्पाद हैं जो कोयले और ईंधन-तेल के उच्च-तापमान में दहन से उत्पन्न होते हैं।
- ये कण औद्योगीकरण के स्पष्ट पर्यावरणीय संकेतक हैं क्योंकि जीवाश्म ईंधन दहन के अलावा इनकी उत्पत्ति का कोई अन्य मानवजनित या प्राकृतिक स्रोत नहीं है।
- अंटार्कटिक आइस कोर में पहली बार स्फीयरॉइडल कार्बोनेसियस कणों की पहचान की गई है, ये कण 1936 से यहाँ बर्फ में मौजूद हैं।

त्रिशूर पूरम उत्सव

- यह केरल में मलयालम माह मेदोम (अप्रैल-मई) के दौरान मनाया जाने वाला उत्सव है।
- पूरम में त्रिशूर और इसके आसपास के दस मंदिर शामिल होते हैं तथा त्रिशूर पूरम को अन्य सभी त्योहारों से ऊपर माना जाता है। इसकी शुरुआत कोचीन के महाराजा राम वर्मा (1790-1805) ने की थी।
- यह उत्सव वडक्कुनाथन मंदिर पर केंद्रित है जहाँ भगवान शिव को श्रद्धा अर्पित करने के लिये जुलूस भेजा जाता है।
- चेंदा मेलम और पंच वद्यम संगीत के साथ मंदिर के प्रांगण में एक विशाल परेड का आयोजन किया जाता है।